



रंगों के अद्भुत चितरे हैं रजा

विनोद भारद्वाज

समकालीन आधुनिक भारतीय कला की शुरुआती ताकत पहचाननी हो तो हमें अमृता शेरगिल, मकबूल फिदा हुसेन, सैयद हैदर रजा, फ्रांसिस न्यूटन सूजा, गायतोंडे, रामकुमार, अकबर पदमसी, तैयब मेहता सरीखे नामों की ओर ध्यान देना होगा। आजादी के साथ ही मुंबई में 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप' की स्थापना हुई और इस ग्रुप के माध्यम से हुसेन, रजा और सूजा फोकस में आये। पचास के दशक की शुरुआत में रजा पेरिस चले गये, सूजा लंदन (बाद में न्यूयार्क) और हुसेन ने भारत रहना ही सही समझा (विडंबना यह है कि आज 92 साल की उम्र में सांप्रदायिक सोच के लोगों ने हुसेन को लंदन और दुबई में रहने के लिए मजबूर कर दिया है)।

ये तीनों कलाकार अलग-अलग मिजाज के हैं। सूजा हमारे बीच नहीं रहे लेकिन हुसेन और रजा की रचनात्मकता अद्भुत आश्चर्यलोक की तरह आज कुछ-न-कुछ नया कर रही है। सैयद हैदर रजा हाल में 85 वर्ष के हुए हैं। पिछली 22 फरवरी को उनके जन्मदिन पर राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में रजा के चुने हुए चित्रों की एक प्रदर्शनी शुरू हुई और उसी शाम वरिष्ठ चित्रकार राम कुमार ने 'ए लाइफ इन आर्ट : रजा' का विमोचन किया। इस पुस्तक को दिल्ली की चर्चित कला दीर्घा, 'आर्ट एलाइव' ने प्रकाशित किया है।

रजा शुरू में जलरंग माध्यम में लैंडस्केप बनाते थे। मुंबई, बनारस, कश्मीर सभी जगहों के लैंडस्केप उन्होंने बनाये। मध्य प्रदेश में जन्मे और एक फारेस्ट रेंजर की संतान रजा को प्रकृति बचपन से ही आकर्षित करती रही। पेरिस जाकर रजा ने पश्चिमी आधुनिक कला की भाषा को निकट से जाना और जांचा। पेरिस

में उन्हें सफलता भी मिली। फ्रांसीसी कलाकार जानीन से विवाह के बाद रजा पेरिस में ही बस गये। 1950 से वह पेरिस में रह रहे हैं लेकिन भारत से उनका भावनात्मक रिश्ता गहरा और अद्भुत है। 1978 में 'मध्य प्रदेश कला परिषद्' ने भोपाल में रजा को बुलाकर इस कलाकार की अपनी जड़ों की खोज को एक नई पहचान दे दी। आज 'भारत भवन', भोपाल में रजा के अनेक चित्र हैं और पिछले लगभग तीस सालों में मध्य प्रदेश में महत्वपूर्ण अमूर्त चित्रकारों की एक लंबी सूची बन गई है। यूसुफ, अखिलेश, मनीष पुश्कले, रहीम मिर्जा, योगेंद्र त्रिपाठी, सीमा घुरैया, मनोज कचंगल आदि अनेक युवा कलाकार आज अमूर्त कला के प्रमुख



हस्ताक्षर हैं। ये सभी रजा से प्रेरित-प्रभावित हैं।

1980 के आसपास रजा ने बिंदु की खोज शुरू की थी। कलाकार के रूप में उनका यह नया जन्म था। रजा अपने बचपन के अध्यापकों के नामों को हमेशा आदर से याद करते हैं।

हिंदी कविता के वह गहरे पाठक हैं और कैनवास पर देवनागरी में कविता, शायरी या गीत का भी इस्तेमाल करते हैं।

जर्मन कवि रिल्के से लेकर हिंदी कवि केदारनाथ सिंह तक उन्हें बराबर प्रेरणा देते रहे हैं। हुसेन या सूजा बहुत तेजी से काम करते रहे हैं लेकिन रजा धीरे-धीरे समय लेकर काम करते हैं। अपनी डायरी में उन्होंने लिखा भी



है- 'समय लगता है चित्र बनाने में, एकाग्रता की जरूरत होती है वर्ना चित्र, चित्र नहीं...' रजा की कला की कुंजी इसी एकाग्रता में है। रंगों के वह अद्भुत चितरे हैं। रजा पर पुस्तक में फ्रांज काफ़्का का एक उद्धरण है- 'एक बूंद भी छलककर गिर नहीं सकती है और एक बूंद के लिए भी जगह नहीं बची है।' रजा की कला में इसी 'परफेक्शन' की तलाश है और साधना भी। एक बूंद न ज्यादा, न कम।

एफ-16, प्रेस एन्क्लेव, साकेत, नई दिल्ली-110017
email: vinayak2@hotmail.com